ॐ नाम तो लिया नहीं .....

ॐ नाम तो लिया नहीं, फिर जग में आकर क्या किया ।
जग में आकर क्या किया, दुनिया में आकर क्या किया ।।
ॐ नाम ....

झूठ कपट कर मन मूरख, लाखों का धन जोड़ लिया ।
दान गरीब को दिया नहीं फिर, माया पाके क्या किया ।।
ॐ नाम ....

संतों के तू नित गया, कथा सुनी और भजन किया ।
ज्ञान हृदय में धरा नहीं, फिर पण्डित होकर क्या किया ।।
ॐ नाम ....

औरों को उपदेश दिया, और ऊँचा आसन जमा दिया ।
सत्य कभी तू बोला नहीं रे, झूठ ही झूठ में तू जिया ।।
ॐ नाम ....

'शिवदत्त' कहता रे मन मूरख, विषयों का रस खूब पीया ।
राम–नाम तो लिया नहीं, बस हराम की खाकर ही जिया ।।
ॐ नाम ....

गुरु बिन ज्ञान न उपजै, गुरु बिन मिलें न मोक्ष।
गुरु बिन लखे न सत्य को, गुरु बिन मिटे न दोष।।